एसेंस

गणेश चौथ पर्व विशेषांक

ध्यान मूलं गुरूर्मूर्ति । मंत्र मूलं गुरूर्वाक्यम् ।।
पूजा मूलं गुरौपदम् । मोक्ष मूलं गुरौकृपा ।।

जनवरी २०२४ www.himgirispiritual.org अंक : २१

राम जन्मभूमि मंदिर

प्राण प्रतिष्ठा - २२ जनवरी २०२४

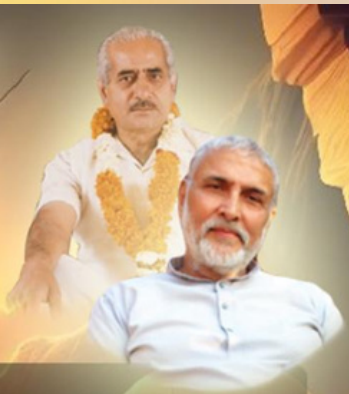

राम जन्मभूमि मंदिर के भव्य उद्घाटन के अवसर पर, हम गुरुधाम, लोनावला में श्रीरामचरितमानस का अखंड पाठ का आयोजन कर रहे हैं।

यह पाठ २१ जनवरी, २०२४ दोपहर १२:३० से२२ जनवरी, २०२४ दोपहर १२:३० तक चलेगा।

तत पश्चात श्री रामजी की आरती, श्री राम स्तुति का पाठ तथा प्रशाद का वितरण होगा।

प्रशाद के बाद हम मिलकर १०८ श्री राम स्तुति का पाठ करेंगे।

हम आप सभी को इस पाठ में शामिल होने के लिए आमंत्रित करते हैं। यह पाठ हमारे लिए एक ऐतिहासिक अवसर है।

जो श्रद्धालु गुरुधाम नहीं पोहोंच सकते, वे अपने स्थान में दीप प्रज्वलित करें।

अनुभव | सहभाग | सेवा

www.himgirispiritual.org

/himgirispiritual

Ganesh Chauth

29th January 2024

कर्म से पाओ सिद्धि, पाओ श्रम से रिद्धि ...
बंजाओ गण उसके , वो बनादेगा गणपति ...

Sow seeds of action, reap success' bright fruit,
Sweat be the rain, let blooms of wealth take root.
Embrace the Gana's path, a dance divine,
Transform yourself, Ganesha shall be thine.

Nirjal fast to be observed as per will power

29th January 2024

6:05am	Jyoth
9:05am	Havan
9:05pm	Darshan

Experience | Participate | Volunteer

All are welcome

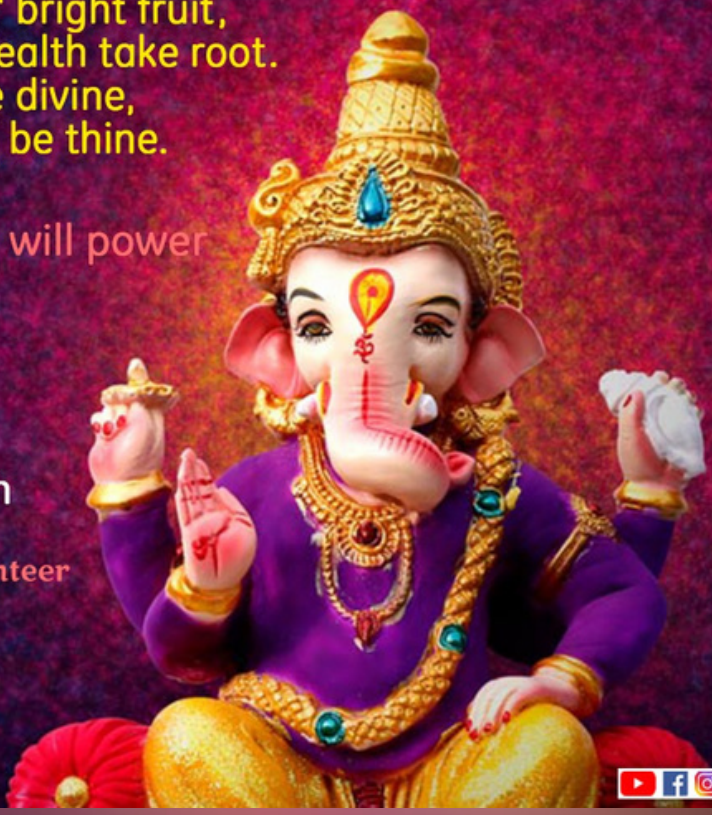

www.himgirispiritual.org

/himgirispiritual

शिवचालीसा

२९ जनवरी - ८ मार्च २०२४

ॐ नमोः गुरुदेव

पूज्य गुरुजी और माताजी के आशीर्वाद और पूजनीय गुरुमाँ के दिशा निर्देश अनुसार, गुरुपरिवार के सेवादारों का गुरुधाम में शिव चालीसा में भाग लेने के लिए स्वागत है। नए साल के आगमन पर, हम सभी उनके चरणों में शांतिपूर्वक स्थिति की प्रार्थना कर 'अपने शिव ' – 'अपने गुरु' के समीप आएं।

शिव चालीसा यह ४० दिन का कार्यक्रम है जहां हम अपने भीतर की विलासिता को खोजने और संतोष का अनुभव करने की राह पर चलते हुए सेवा में डूब जाते हैं।

गणेश चौथ (शिव चालीसा आरम्भ): २९ जनवरी २०२४
महाशिवरात्रि पर्व (शिव चालीसा समापन): ८ मार्च २०२४

पूर्व पंजीकरण और सहमति अनिवार्य है। आगे की सभी जानकारी / प्रश्नों के लिए कृपया हमारे सेवादार +९१ ९९२०९२०९३५ से संपर्क करें

आप सभी का सहयोग सराहनीय और अनिवार्य होगा।

www.himgirispiritual.org

/himgirispiritual

शिव चालीसा

प्रश्न: हम सभी ने अक्सर सुना है... गुरु चालीसा, शिव चालीसा, हनुमान चालीसा और दुर्गा चालीसा... चालीसा (चालीस दिन) का क्या महत्व है? हमारी सभी चालीसा की प्रार्थनाओं में चालीस चौपाइयां क्यों होती हैं? चालीस चौपाइयों से अधिक या कम क्यों नहीं ? और अंत में गुरुस्थान पर केवल चालीस दिनों की शिव चालीसा और गुरु चालीसा ही क्यों?

उत्तर: जब कोई बच्चा ('जीवात्मा') इस दुनिया में आता है तो उसे चालीस दिनों तक सभी से अलग रखा जाता था। कहा जाता है कि उन चालीस दिनों में उस पर कोई नकारात्मक प्रभाव नहीं पड़ना चाहिए और उसे अपनी मां के साथ सकारात्मक माहौल में रहना चाहिए ताकि बच्चे में सकारात्मकता के बीज बोए जा सकें। बच्चा जन्म के बाद चालीस दिन में, गर्भाशय अपने प्राकृतिक अवस्था में आता है इसलिए बच्चे और मां को अलग कमरे में रखा जाता था ताकि मां और बच्चा दोनों स्वस्थ रहे।

मानव शरीर में चालीस दिनों की समय सीमा के आसपास बहुत सारे शारीरिक परिवर्तन भी होते हैं। हम जानते हैं कि त्वचा हमारे शरीर का सबसे बड़ा अंग है और यह सच है कि हर चालीस दिनों में हमारी त्वचा नई हो जाती है। यही 'चालीसा' सिद्धांत आंतरिक दुनिया पर भी लागू होता है। यदि हमें अपने आप में परिवर्तन लाना है या अपनी आदतों में सुधार करना है तो हमें जीवन में चालीस दिन तक लगातार उन गतिविधियों का अभ्यास करना चाहिए। इससे उन आदतों, व्यवहार और गुणों में महत्वपूर्ण सुधार होते है।

गुरुस्थान पर, साल में दो बार चालीसा मनाई जाती है। गुरुजी कहते हैं कि “शिवरात्रि तुम्हारी मध्यावधि परीक्षा है और गुरु पूर्णिमा तुम्हारी वर्ष की अंतिम परीक्षा है।

जैसे कि सांसारिक दुनिया में, आप परीक्षा के लिए उपस्थित होते हैं, उत्तीर्ण होते हैं और प्रमाण पत्र लेते हैं । पूछने पर, " गुरुजी हम इन परीक्षाओं में कैसे पास हो सकते हैं?"
गुरुजी कहते हैं कि "बस, ध्यान गुरु मे रखना, 'गुण' गुरु है"।
गुण, यहाँ भी व्यवहारों, गुणों, विशेषताओं, स्थितियों का एक समूह है जो पूरी तरह से हृदय और आत्मा द्वारा निर्देशित होता है।
शिवरात्रि से 40 दिन पहले शिव चालीसा है और गुरु पूर्णिमा से 40 दिन पहले गुरु चालीसा है और यही कारण है कि गुरु स्थान में शिव चालीसा और गुरु चालीसा का पालन किया जाता है।

प्रश्न: गुरु चालीसा में वास्तव में क्या होता है?
उत्तर: चालीसा के सभी तत्व हमारे भीतर हैं।
पंच-महाभूत (पांच मौलिक तत्व): अग्नि, जल, पृथ्वी, आकाश और वायु ।
पंच-प्राण (पांच जीवन रूप) विभिन्न प्रक्रियाओं को चलाने के लिए शरीर में स्थापित हैं: प्राण, अपान, व्यान, उदान और समान।
पांच ज्ञानेंद्रिय: कान, नाक, आंख, जीभ और त्वचा।
पांच कर्मेन्द्रिय: वाक्, हाथ, पैर, गुदा और लिंग।
पंच तत्व (तन्मात्रा): शब्द, गंध, रूप, स्वाद और कंपन ।
अंत:करण चतुष्टय: मन, बुद्धि, चित्त, अहंकार।
षड् रिपु /विकार: काम, क्रोध, लोभ, मोह, मद, मत्सर ।
तीन प्रमुख गुण : तमस, रजस, और सत्व।

जीवात्मा। शिवात्मा।
यदि हम चालीसा के दौरान गुरु ध्यान या गुरु चेतना में रहते हैं, तो ये सभी 40 तत्व हमारे भीतर जागृत होने लगते हैं।
गुरु ध्यान के लिए हम गुरु वंदना का पालन कर सकते हैं। दिन के प्रारंभ से ही यदि हमारा ध्यान स्वयं पर और गुरु पर हो तो गुरु की कृपा से जानने और स्वीकार करने के बाद हम अपनी कमियों को दूर कर सकते हैं।
गुरुजी कहते हैं, गुरु समाधान, शिष्य सावधान।
यदि शिष्य उपयुक्त रूप से चौकस और बहुत सावधान है, तो गुरु उसकी सभी समस्याओं का समाधान प्रदान करेगा।
उन्होंने यह भी साझा किया कि, हमें हर दिन पूछना है और संकल्प करना है की "आज मैं बेहतर क्या कर सकता हूँ?" और उस संकल्प के अनुसार हमारे विचार बनेंगे और हमारा व्यवहार अपने आप अच्छा होगा ! "बाकी, सब मालिक की इच्छा है" ।

सब कुछ वैसा ही होगा जैसा कि परमात्मा द्वारा तय किया गया है, तो आइए हम सब कुछ को अपने गुरु के पवित्र चरणों में छोड़ दें। वह उन सभी का ख्याल रखेंगे।

२०२३- झलकियाँ

परम पूज्य गुरुजीनें हमें 2023 में बहुत सारे सेवा के अवसर उपलब्ध कराए ।

तिल चौथ से शुरू हुआ ये सेवा का सिलसिला महाशिवरात्री, हनुमान जन्म उत्सव और गुरुपौर्णिमा के साथ इस साल एक और दुर्लभ सेवा का अवसर मालिक ने हम सब को दिया और वो था,19 साल के बाद आया हुआ श्रावण- पुरुषोत्तम मास का सोमवार लंगर सेवा का अवसर।

इस वर्ष 2023 में श्रावण माह के अंतर्गत ही पुरुषोत्तम मास का प्रारंभ होने से अवसरी ग्राम स्थित महादेव मंदिर का श्रावण मास लंगर प्रसाद पर्व 24 जुलाई 2023 को पूजनीय माताजी के पावन सान्निध्य में प्रारंभ हुआ और 11 सितंबर 2023 को पूज्य दादाजी के उपस्थित संपन्न हुआ । इस लंगर सेवापर्व में मुख्य स्थान गुरुधाम के सेवादार महाराज गुरुजी और संगत के साथ विमाननगर, कोंढवा, देहूरोड, नाशिक, सोलापूर, लोणावळा और मुंबई स्थान के सेवादार और संगत ने अपने सेवा के पुष्प मालिक के श्रीचरणों में अर्पित किए । हमारे अपने भीतर के गुरुतत्त्व को जागृत करने हेतू अवतरीत हुए हमारे परम पूज्य गुरुजी का जनम दिन,

अविर्भाव दिन, 29 सितंबर 23 को पूजनीय माताजी के सान्निध्य में प्रादुर्भाव हवन के साथ मनाया गया । इसी हवन में लंदन गुरुस्थान, दिल्ली गुरु स्थान के साथ विभिन्न स्थानों की संगत शामिल हुई । मुफ्त स्वास्थ्य चिकित्सा का आयोजन भी किया गया था ।

24 नवम्बर को गुरुधाम के सेवादार श्री. मनोज और रेणुका असनानी की सुपुत्री चि. सौ. कां. राधेय का शुभविवाह भुवनेश्वर के चि. कुणालजी के साथ जगन्नाथ पूरी में संपन्न हुआ । इस कन्यादान के लिए गुरुधाम के ज्येष्ठ सेवादार महाराज गुरुजी और 40 अन्य सेवादार और दुबई गुरु स्थान के सेवादार उपस्थित थे । इसी संगत ने जगन्नाथ पूरी सहित गंगासागर की यात्रा का भी आनंद लिया । 1 दिसंबर 23 को यही नव-दंपति को परम पूज्य गुरुजी और माताजी के दर्शन हेतू हवन और वरमाला विनिमय समारोह भी किया ।

पूरे साल में विभिन्न सेवाओं का अवसर देने के लिए परम पूज्य गुरुजी का शुक्रिया अदा करने और नए साल के लिए आशीष पाने हेतु 31 दिसंबर के रात सभी संगत के लिए कैम्पफायर और ध्यान का आयोजन गुरूधाम में किया गया था ।

आनेवाले साल में परम पूज्य गुरुजी और माताजी के कृपाआशीर्वाद हम सभी पर बनाए रहे यही प्रार्थना के साथ आप सभी को टीम इसेंस की ओर से हार्दिक शुभकामनाएं ।

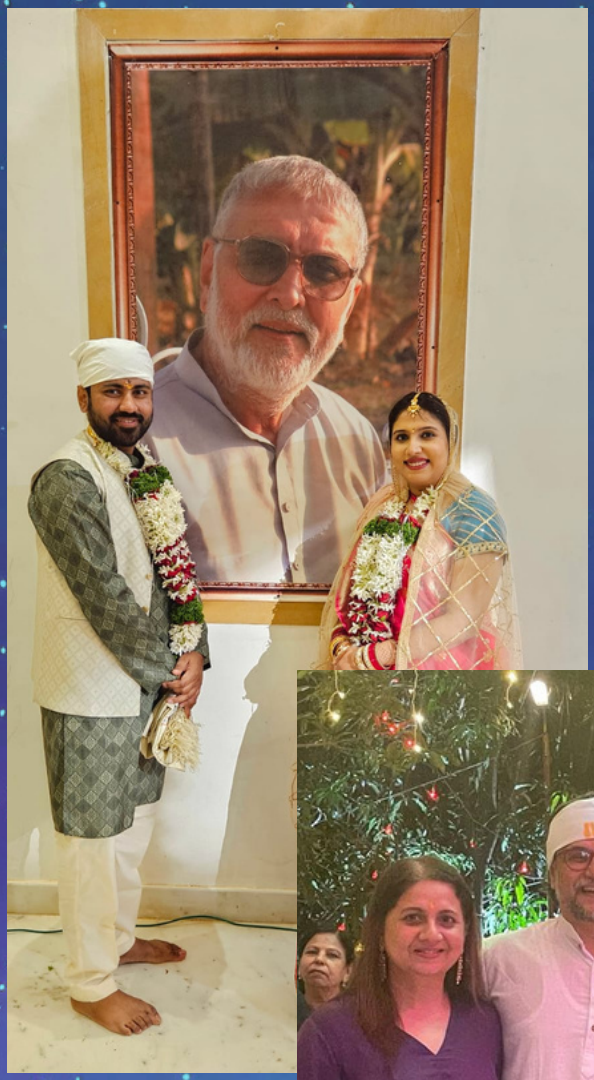

गुरु का संग

।।ॐ नमो गुरुदेव ।।

जीवन में गुरु की आवश्यकता क्यों है ? जीवन है क्या ?

जीवन है ही इस आत्मा का अपने परमात्मा (गुरु) से मिलन का सफर, तो उनके बिना यह जीवन, जीवन भी कैसे हो सकता है ?! सब कुछ अधूरा है !

यह जीवन जन्म से मृत्यु तक का एक सफर है जिसमें आत्मा जन्मो जन्मो तक उलझी रहती है क्योंकि

जब वह अपने परमपिता से बिछड़ कर इस धरती पर आती है तो इस संसार के भ्रमजाल में फंसकर अपने वास्तविक स्वरूप को भूल जाती है और यहां के माया जाल में ही अटकी रह जाती है। हमारे परमपिता तो हमें हर जन्म में फिर से परिशुद्ध करके इस धरती पर भेजते हैं। वे कहते है, जा बेटा अपना हिसाब किताब पूरा कर और मुझे आकर मिल ! और वे हमारा इंतजार करते रहते हैं, और हम हैं कि यहां के मोह जाल में ही फंसे रह जाते हैं । फिर हमारे परमपिता को स्वयं धरती पर उतरना पड़ता है गुरु रूप में । वे हमें हमारे

विकारों के साथ फिर से अपनाते हैं अपने प्रेम की गंगा मेंनहलाकर फिर से हमें परिशुद्ध आत्मा के रूप में तैयार करते हैं ।

हमसे सेवा करवा कर हमारे जन्मों जन्मों के कर्मों को कटवाते हैं और फिर से हमारा हमसे ही मिलन करवा देते हैं ।

ऐसे तो गुरु (तत्व रूप में) सदैव हमारे साथ ही रहते हैं लेकिन हम इतने रहते हैं अपने आप में, कि अपने परमपिता की आवाज को सुन ही नहीं पाते, उनके साथ को पहचान ही नहीं पाते ! तब उन्हें धरती पर आना पड़ता है, साक्षात सद्गुरु के रूप में। हमने जाने कौन से पुण्य कर्म किए होंगे पिछले जन्मों में जिसके फल स्वरुप हमारे साक्षात गुरु ने हमें चुना, अपनाया, तो हम उनके दिखाए मार्ग पर चलते चले, स्वयं से मिलन की इस यात्रा में । चाहे जो भी हो जाए अपने गुरु चरणों को थामे रहे और इस संसार में रहते हुए ही अपने परम पिता से एक हो जाए।

उनकी कृपा का पात्र बन ,स्वयं को ऐसा बना ले
कि हमारे गुरु भी बोल उठे वाह मेरे बच्चे...

बिन गुरु जीवन नीरस,
रहा मन तरस,
आंखे रही बरस
अब तो दे दो दरस,
जीवन हो जाए "सरस"!

शीश दिये तो शिष्य - गणेश एक प्रतीक

परम पूज्य गुरुजी कहते है अपने शरीर मे सब कूछ है, इससेही युनिव्हर्स का know how मालूम पडेगा. पूरे ब्रह्मांड में जो है वो सब हमारे अंदर ही है ।

हमारा शरीर ही *मंदिर* है । हमारे पैर उस मंदिर के ओर ले जाने वाली सीढिया है । हमारा पेट इस मंदिर का सभामंडप है और *हृदय* इस मंदिर का *गर्भगृह* है जिसमें *परम पूज्य गुरुजी* की अंश रूपी प्रतिमा स्थापित है । मंदिर का कलश बुद्धि है । बुद्धि कलश की तरह अनंत का वेध लेनेवाली भौतिकता मे खोने वाली है । जिसको गर्भगृह मे स्थापित गुरुजी की प्रतिमा दिखती ही नहीं इसलिए गुरु दिल का विषय है, दिमाग का नहीं ।

गुरुजी पूछते है बेटा दिल और दिमाग में कितना गॅप है?

बुद्धि को दिल मे स्थापित गुरुजी की प्रतिमा की ओर जोड़ने के लिए सिर्फ सच्चे भाव भक्ति और श्रद्धा की जरूरत है । इसीलिए शरीर में व्याप्त मन का सहारा जरूरी हैं ।

भगवद्गीता कहती है:

बुद्धि सहित भाव और श्रद्धा ही अनन्य भक्ति है और अनन्य भक्ति जागृत होने के लिए परम पूज्य गुरुजींने हमको सेवा का सरल मार्ग दिखाया है ।

शिश दिये तो शिष्य बने, गणेश जिसने अपना शिश दिया ।

तिला चौथ से महाशिवरात्री का ४० दिन का सफर, गुरुजी कहते है ये शिष्य का पहला सेमिस्टर है ।

चार वर्ण भी हमारे अंदर ही है. कंठ से सिर का हिस्सा ब्राह्मण है, भूजाये-क्षत्रिय, पेट – वैश्य और पैर शूद्र ।

गणेशजी के गुण

१.ब्राह्मणत्व : जब गणेशजी ने भगवान शिव का मार्ग रोका, इसका अर्थ हुआ कि अज्ञान, जो कि मस्तिष्क का गुण है, वह ज्ञान को नहीं पहचानता, तब ज्ञान को अज्ञान से जीतना ही चाहिए । इसी बात को दर्शाने के लिए शिवजी ने गणेशजी के सिर को काट दिया था।

श्रीगणेश जी का बड़ा मस्तक विशाल बुद्धि का प्रतीक है। इसलिए जब हम *परम पूज्य गुरुजी के श्रीमुख* से निकले वचनो का गहरा आध्यात्मिक अध्ययन करते हैं और इसे अपने हर विचार, शब्द और कार्य में समझ के साथ एप्लाई करते हैं, तो हम विवेकशील हो जाते हैं। *विवेकशीलताही हमे हृदयस्थित गुरु प्रतिमा तक ले जाती है ।

सूप / छलनी जैसे चौड़े कानों का मतलब है कि, हम केवल किसी व्यक्ति वा परिस्थिति में सिर्फ अच्छाई को ही ग्रहण या आत्मसात करते हैं और शुद्ध जानकारी ग्रहण करने से हमारा मन सदा स्वच्छ रहता है ।

उनकी छोटी आंखें दूरदर्शिता का प्रतीक हैं, जिसका अर्थ है कि, कर्म करने से पहले उसके भविष्य में होने वाले परिणाम देखने के बाद ही कर्म करें। एकाग्रता पाने मे मदद होती है। दो आखे का सही इस्तेमाल करेंगे तो ही तिसरी आंख खुलेगी।

उनका छोटा मुख हमें यह याद दिलाता है कि, हम कम बोलें और हमारे द्वारा बोले गए हर शब्द दूसरों के लिए आशीर्वाद बने।

श्रीगणेश को एक ही दाँत के साथ दिखाया जाता है जोकि यह दर्शाता है कि, हमें पसंद-नापसंद, सुख-दुख, सुखद-अप्रिय, अच्छे-बुरे के द्वंद्व में नहीं फंसना चाहिए। हमें इन सभी पर काबू पाना होगा और हमेशा संतुष्टता का भाव रखकर सभी परिस्थितियों में शांतिपूर्ण रहना होगा।

उनके विशाल पेट के समान; तना (सुंढ-ट्रंक) इतना शक्तिशाली होता है कि, पेड़ों को उखाड़ सकता है और साथ ही उतना ही मुलायम होता है कि, एक बच्चे को उठा सकता है। इसका मतलब है कि, हमें भावनात्मक रूप से नरम और मजबूत होने की जरूरत है ।

2. क्षत्रियत्व: श्री गणेश के हाथों में कुल्हाड़ी, रस्सी और कमल दिखाया जाता है और उनका एक हाथ आशीर्वाद देने की मुद्रा में रहता है । हमारे अंदर सात्विक गुण और विकारो से उत्पन्न होनेवाले असुरी गुण की लढाई चल रही है । अपने विकारो पर विजय पाने के लिये कुल्हाड़ी उपयुक्त है, वहीं रस्सी पवित्र जीवनशैली के अनुशासन में बंधे रहने का प्रतीक है, जिससे पवित्र आचरण पाके हम शिव की ओर अग्रेसर होते है । कमल का अर्थ है कि, कीचड़ भरे वातावरण में रहते हुए भी अछूत व शुद्ध रहना, इससे वैराग्य की भावना जागृत होती है जो की शिवजी की प्रिय भावना है ।

आशीर्वाद भरा हाथ बताता है कि दूसरों का आचरण, व्यवहार कैसा भी हो, लेकिन हमारे संकल्प और बोल आशीर्वाद भरे ही हों, इससे गुरुजी हमे आशीर्वाद देनेवाला बननेकी राह पर ले रहे है । साथ ही, उनके एक हाथ में मोदक; कड़ी मेहनत के बाद मिली सफलता को दर्शाता है। लेकिन उन्हें कभी भी मोदक को खाते हुए नहीं दिखाया गया है, जिसका मतलब है कि, सफलता हासिल करो लेकिन उसका श्रेय मत लो। मोदक एकता और सहयोग का प्रतीक भी है क्योंकि, इसे बनाने के लिए सभी 5 उंगलियों की आवश्यकता होती है।

3. वैश्य: पेट से ही हृदयस्थित गुरुजीके पास जाने का मार्ग है और ओ सिर्फ भावनात्मक है । श्री गणेश का बड़ा पेट समाने की शक्ति को दर्शाता है, जिसका अभिप्राय है कि, हमें लोगों की कमजोरियों और उनके गलत कार्यों के बारे में दूसरों से बात नहीं करनी चाहिए, बल्कि उन्हें अपने अंदर समा लेना चाहिए । पेट सभामंडप है इसको साफ सुथरा रखना जरुरी है इसलिये इसमे जो अन्न ग्रहण करते उसे प्रार्थना पूर्वक प्रसादरूप से प्रेमपूर्वक गुरु चरणो का ध्यान करके ग्रहण करना है क्यूंकि जैसा अन्न वैसा मन ।

4. शूद्र : उनके बैठने की मुद्रा में, उनका एक पैर जमीन को छूता है और दूसरा पैर वे मोड़कर बैठेते हैं जिसका मतलब है कि, हमें हमेशा ज़मीन से जुड़े रहकर विनम्र बने रहना है और संसार में रहते हुए भी उससे न्यारे होकर रहना है।

पैर से ही गुरुघर जानेवाली सिढीया चढी जाती है । पैर का काम है परिचर्या करना याने *सेवा* करना । श्रीगणेश के पैरों के पास चूहे को बैठा दिखाया जाता है जिसका अभिप्राय है कि, बुराइयों और इच्छाओं पर विजय का प्रतीक स्वयं गणेश जी हैं; जिस प्रकार चूहा एक छोटे से छेद से भी चुपचाप घर में प्रवेश कर जाता है । उसी प्रकार जब जीवात्मा का ध्यान गुरु से हट जाता है, तब विकार चुपचाप प्रवेश कर जाते हैं और दुर्घटना घटती है । तो इस प्रकार जब हम श्री गणेश के सभी गुणों को अपना लेंगे तो, अपने विकारो को नियंत्रण मे रखने मे कामयाब होंगे।

ऐसे ही जब हम अपने हर संकल्प, बोल और कर्म में "श्री गणेश" के प्रतीक; दिव्य गुणों को अनुभव करना और स्वरूप बनना शुरू करते हैं, तो हमारी गणेश से गणाधीश (जो की हमेशा शिवजी के साथ होता है) की यात्रा की बाधाएं नष्ट हो जाती हैं और हमारा ये यात्रा का पहला पडाव आसानीसे पुरा हो सकता है ।

तिला चौथ के इस पावन पर्व पर चलो हम एक संकल्प करते है गणेशजी के गुण को अपनाने का ।

आप सभी को तिला चौथ और शिव चालीसा आरंभ की हार्दिक शुभकामनाये ।

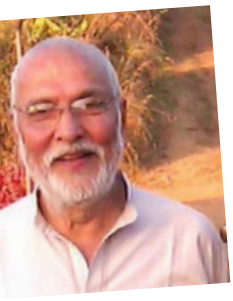

Essence 2024

CALENDAR

हर तैराक तैरते-तैरते डूब गया, कोई तैराक तारते-तारते तर गया।

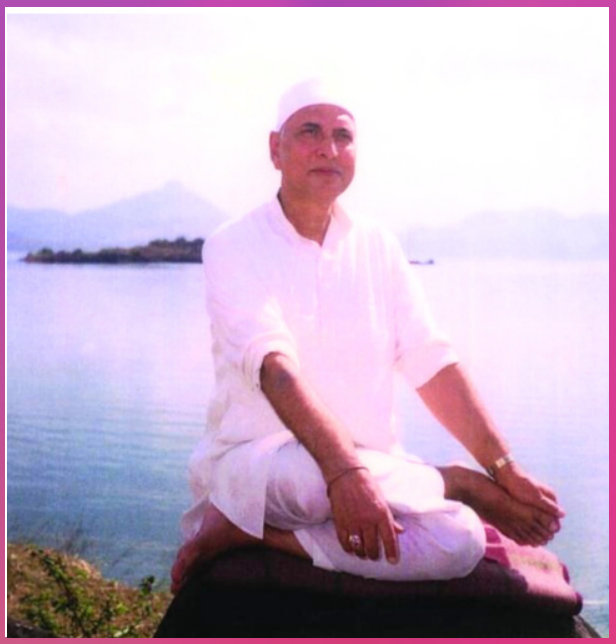

SU	MO	TU	WE	TH	FR	SA
31	1	2	3	4	5	6
7	8	9	10	11	12	13
14	15	16	17	**18**	19	20
21	22	23	24	**25**	26	27
28	**29**	30	31	1	2	3

१८.०१.२०२४ बडा गुरुवार गुरुगाव
२५.०१.२०२४ बडा गुरुवार अंधेरी
२९.०१.२०२४ तिला चौथ

January

Essence

कुदरत सब की जननी है, बुराई लेकर अच्छाई देती है,
गुरु उसका प्रतिक है, विकार लेकर अच्छाईया देता है

SU	MO	TU	WE	TH	FR	SA
28	29	30	31	1	2	3
4	5	6	7	8	9	10
11	12	**13**	**14**	**15**	16	17
18	19	20	21	**22**	23	24
25	26	27	28	29	1	2

१३.०२.२०२४ गणेश जयंती
१४.०२.२०२४ वसंत पंचमी,परम पूज्य दादा गुरुजी अवतरण दिन
१५.०२.२०२४ बडा गुरुवार गुरुगाव
२२.०२.२०२४ बडा गुरुवार अंधेरी

February

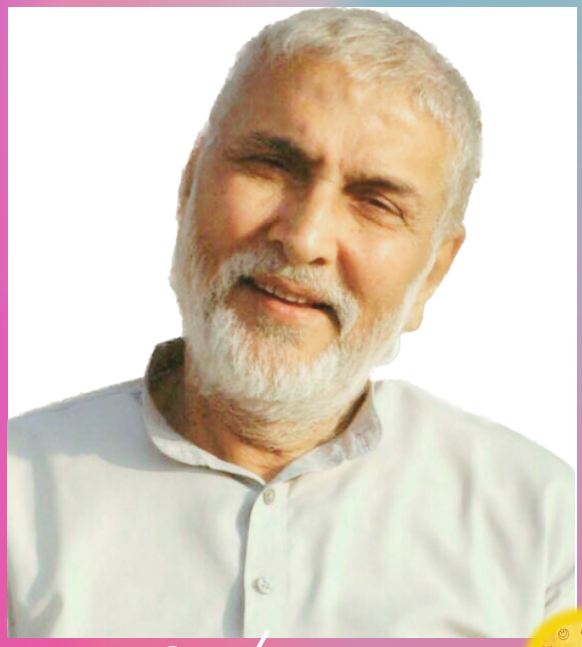

Essence

आज्ञा में आ गया गुरु मन को भा गया ।

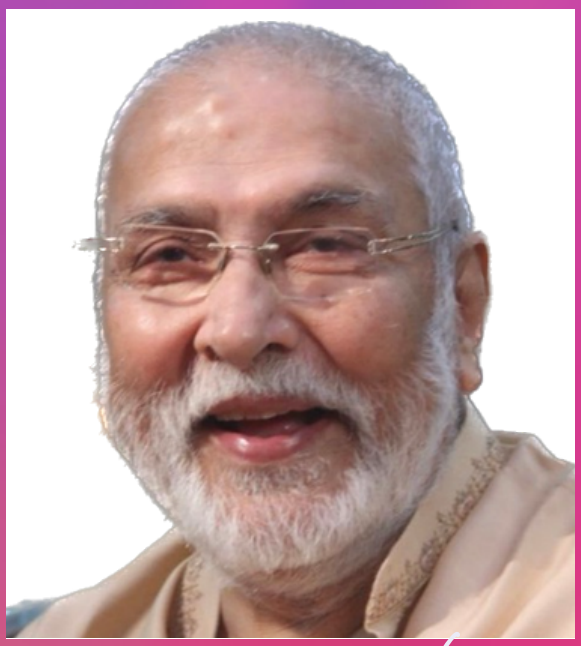

March

SU	MO	TU	WE	TH	FR	SA
25	26	27	28	29	1	2
3	4	5	6	7	**8**	9
10	11	12	**13**	**14**	15	16
17	18	19	20	**21**	22	23
24	**25**	26	27	28	29	30
31						

०८.०३.२०२४ महाशिवरात्री
१३.०३.२०२४ हनुमान चालीसारंभ
१४.०३.१०२४ बडा गुरुवार गुरुगाव
२१.०३.२०२४ बडा गुरुवार अंधेरी
२४. ०३.२०२४ होली गुरुगाव
२५.०३.२०२४ धुलीवंदन गुरुगाव

Essence

ॐ “परम पूज्य गुरूजी के चरणोंमें समर्पित” ॐ

टीम एसेंस

॥ ॐ नमो गुरुदेव ॥

सुझाव एवम् सेवा के लिए सम्पर्क करें

व्हाटसऐप : +91 7028019801

ईमेल : essencesoulseeds@gmail.com